



भारतीय कॉफी की पाँच किस्मों को जीआई टैग

संदर्भ

- भारत में 3.66 लाख कॉफी किसानों द्वारा तकरीबन 4.54 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में कॉफी उगायी जाती है।
- इनमें से 98 प्रतिशत छोटे किसान हैं। कॉफी की खेती मुख्यतः भारत के दक्षिणी राज्यों में की जाती है।
- केन्द्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय भारतीय ने कॉफी की पाँच किस्मों को भौगोलिक संकेतक प्रदान किया है।
- इससे पहले भारत की एक अनोखी विशिष्ट कॉफी 'मानसूनी मालाबार रोबस्टा कॉफी' को जीआई प्रमाणन दिया गया था।
- कॉफी गैर-परंपरागत क्षेत्रों जैसे कि आंध्र प्रदेश एवं ओडिशा (17.2 प्रतिशत) और पूर्वोत्तर राज्यों (1.8 प्रतिशत) में भी उगायी जाती है।

प्रमुख किस्में

- **वायानाड रोबस्टा कॉफी** : यह मुख्यतः वायनाड जिले में उगायी जाती है जो केरल के पूर्वी हिस्से में अवस्थित है।
- **कूर्ग अराबिका कॉफी** : यह मुख्यतः कर्नाटक के कोडागू जिले में उगायी जाती है।
- **बाबाबुदनगिरीज अराबिका कॉफी** : यह भारत में कॉफी के उद्गम स्थल में उगायी जाती है और यह क्षेत्र चिकमंगलूर जिले के मध्य क्षेत्र में अवस्थित है।
- इसे हाथ से चुना जाता है और प्राकृतिक किण्वन द्वारा संसाधित किया जाता है।
- इसमें चॉकलेट सहित विशिष्ट फ्लेवर होता है। कॉफी की यह किस्म सुहावने मौसम में तैयार होती है। यही निमित्त है कि इसमें विशेष स्वाद और खुशबू होती है।
- **चिकमंगलूर अराबिका कॉफी** : यह विशेष रूप से चिकमंगलूर जिले में उगायी जाती है।
- यह दक्कन के पठार में अवस्थित है जो कर्नाटक के मलनाड क्षेत्र से वास्ता रखता है।
- **अराकू वैली अराबिका कॉफी** : इसे आंध्र प्रदेश के विशाखापत्तनम जिले और ओडिशा क्षेत्र की पहाड़ियों से प्राप्त कॉफी के रूप में वर्णित किया जाता है।
- जनजातियों द्वारा तैयार की जाने वाली अराकू कॉफी के लिए जैव अवधारणा अपनायी जाती है जिसके तहत जैविक खाद एवं हरित खाद का व्यापक उपयोग किया जाता है और जैव कीटनाशक प्रबंधन से जुड़े तौर-तरीके अपनाये जाते हैं।

भौगोलिक संकेत (जीआई टैग)

- जीआई टैग अथवा भौगोलिक चिन्ह किसी भी उत्पाद के लिए एक चिन्ह होता है जो उसकी विशेष भौगोलिक उत्पत्ति, विशेष गुणवत्ता और पहचान के लिए दिया जाता है और यह सिर्फ उसकी उत्पत्ति के आधार पर होता है।
- ऐसा नाम उस उत्पाद की गुणवत्ता और उसकी विशेषता को दर्शाता है।
- दार्जिलिंग चाय, महाबलेश्वर स्ट्रॉबेरी, जयपुर की ब्लूपोटेरी, बनारसी साड़ी और तिरुपति के लड्डू कुछ ऐसे उदाहरण हैं जिन्हें जीआई टैग मिला हुआ है।
- जीआई उत्पाद दूरदराज के क्षेत्रों में किसानों, बुनकरों शिल्पों और कलाकारों की आय को बढ़ाकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को फायदा पहुंचा सकते हैं।
- ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले हमारे कलाकारों के पास बेहतरीन हुनर, विशेष कौशल और पारंपरिक पद्धतियों और विधियों का ज्ञान है जो पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होता रहता है और इसे सहेज कर रखने तथा बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

जीआई टैग के फायदे

- जीआई प्रमाणन से जो विशिष्ट मान्यता एवं संरक्षण मिलता है उससे भारत के कॉफी उत्पादक विशिष्ट क्षेत्रों में उगायी जाने वाली कॉफी की अनूठी खूबियों को बनाये रखने में आवश्यक खर्च करने के लिए प्रोत्साहित होंगे।
- यही नहीं, इससे विश्व भर में भारतीय कॉफी की मौजूदगी भी बढ़ जायेगी और इसके साथ ही देश के कॉफी उत्पादकों को अपनी प्रीमियम कॉफी की अधिकतम कीमत प्राप्त करने में भी मदद मिलेगी।

भारत में कॉफी

- भारत पूरी दुनिया में एकमात्र ऐसा देश है जहां कॉफी की समूची खेती छाया वाले माहौल में की जाती है, इसे हाथ से चुना जाता है और फिर धूप में सुखाया जाता है।
- विश्व में कॉफी की कुछ सर्वोत्तम किस्में भारत में ही उगायी जाती हैं। इन्हें पश्चिमी एवं पूर्वी घाटों के जनजातीय किसानों द्वारा उगाया जाता है, जो विश्व में जैव विविधता वाले दो प्रमुख स्थल हैं।
- भारतीय कॉफी विश्व बाजार में अत्यंत ऊँची कीमतों पर बेची जाती है। यूरोप में तो इसकी बिक्री प्रीमियम कॉफी के रूप में होती है।